International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 14-16
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 20-06-2026
Accepted: 07-07-2026
Publish : 08-07-2026

शुभम मिश्र
शोध छात्र, कौमारभृत्य/बाल रोग-विभाग,संकाय-आयुर्वेद,चिकित्सा विज्ञान-संस्थान,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो.प्रेम शंकर उपाध्याय
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कौमारभृत्य/बाल रोग विभाग,संकाय-आयुर्वेद,चिकित्सा विज्ञान संस्थान,काशी-हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

प्रो.सुनील कात्यायन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष , वेद विभाग,संकाय-संस्कृत विद्या धर्म-विज्ञान,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ पूनम शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,द्रव्यगुण विभाग, संकाय-आयुर्वेद,चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

Correspondence:
शुभम मिश्र
शोध छात्र, कौमारभृत्य/बाल रोग-विभाग,संकाय-आयुर्वेद,चिकित्सा विज्ञान-संस्थान,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अथर्ववेदोक्त वनस्पतियों का आयुर्वेदोक्त कौमारभृत्यीय प्रतिपादित ज्ञान

शुभम मिश्र, प्रो.प्रेम शंकर उपाध्याय, प्रो.सुनील कात्यायन, डॉ पूनम शर्मा

प्रस्तावना- मानव जीवन में उपयोग होने वाली सभी वस्तुएँ प्रारम्भ से ही पृथ्वी पर उपलब्ध थीं। समय के साथ मनुष्य ने अपनी बुद्धि और अनुभव का उपयोग करके अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नए-नए आविष्कार किए। आवश्यकता ही आविष्कार की प्रेरणा बनी। प्राचीन काल से ही मनुष्य रोगों से बचाव और उपचार के लिए प्राकृतिक औषधियों का सहारा लेता रहा है। उस समय जनसंख्या कम और वनस्पतियाँ अधिक होने के कारण वातावरण शुद्ध तथा ऑक्सीजन की मात्रा पर्याप्त थी, जिससे रोग भी अपेक्षाकृत कम होते थे। वर्तमान समय में अत्यधिक प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण पर्यावरण का संतुलन प्रभावित हुआ है। इसलिए आज फिर से प्रकृति के अनुरूप जीवनशैली अपनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। भारतीय संस्कृति में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का संबंध वैदिक ज्ञान से माना गया है। वैदिक वाङ्मय एक विशाल ज्ञान-भंडार है, जिसमें जीवनोपयोगी अनेक प्रकार के ज्ञान और विज्ञान का समावेश है। किसी भी विषय की मूल अवधारणा को समझने के लिए वेदों का अध्ययन आवश्यक माना जाता है। इस अमूल्य ज्ञान-संपदा से नई- नई जानकारियाँ प्राप्त करने का प्रयास आज भी निरंतर जारी है। चिकित्सा विज्ञान का प्रमुख आधार विशेष रूप से **अथर्ववेद** को माना गया है।

संकेत – अथर्ववेद,वनस्पति,पर्यायवाची,प्रयोग,चिकित्सा

विषयवस्तुः

अथर्ववेद में विभिन्न औषधियों के स्वरूप, उनकी उत्पत्ति, प्राप्ति-स्थल, औषधीय गुण, रोगों में उनके उपयोग तथा मानव स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव का विस्तृत वर्णन किया गया है। इन औषधियों के प्रयोग की विधि और उनके चिकित्सकीय महत्व का भी उल्लेख मिलता है। इनका विवरण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

- **अपामार्ग** – (Achyranthes aspera linn.)

अथर्ववेद में **अपामार्ग** को एक शक्तिशाली **रोगनाशक एवं शोधनकारी औषधि** के रूप में वर्णित किया गया है, जो क्षुधा, तृष्णा, पित्तदाह, इन्द्रिय-दौर्बल्य तथा बन्ध्यात्व जैसे विविध विकारों को दूर करने में सक्षम मानी गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में इसे समस्त दोषों का नाश करने वाली बहुउपयोगी औषधि के रूप में स्वीकार किया गया था।

क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम् ।
अपामार्ग त्वया वयं सर्व तदमृज्महे ।।[1]

इसका वानस्पतिक नाम- **Achyranthes aspera Linn.** है। कुल नाम- Amaranthaceae है। गुण-लघु, रूक्ष,तीक्ष्ण । रस- कटु,तिक्त । विपाक- कटु । वीर्य- उष्ण । संस्कृत नाम-अपामार्ग, शिखरी, अधःशल्य, मयूरक, खरमंजरी, प्रत्युक्पुष्पा,आघाट। हिन्दी नाम-चिड़चिड़ी,चिरचिटा,चिचड़ा,लटजीरा।[2]

औषधि प्रयोगः

1.अपामार्ग रगड़े तथा मालिश करें अन्य द्रव्य के साथ तो कर्णपाली शीघ्र बढ़ती तथा मोटी व चिकनी भी हो जाती हैं।

रोहिणी स्वयङ्गुप्तामूलं..... च पाली भवतीति ।[3]

2.स्नेह नासिका मे डाले और शुष्क चूर्ण का नस्य दे अन्य द्रव्य के साथ तो मुख व नासिका का कफ नष्ट होता है ।

कफानिलाधिकत्वे .....कफं विघातयतीति परिषत् ।।[4]

3. अपामार्ग को अन्य द्रव्य के साथ धारण करने से रेवती ग्रह एवं अन्य रोग शान्त होते है।

उत्सादनं वचाहिङ्गुयुक्त.....बिम्बीमर्कटाश्चापि धारयेत्।।[5]

➢ **अपराजिता (Clitoria ternatea linn.)**

अथर्ववेद में अपराजिता को एक शक्तिशाली **विषनाशक एवं रोगनाशक औषधि** के रूप में वर्णित किया गया है, जो सर्प एवं बिच्छू के विष को नष्ट करने में सक्षम मानी गई है। इससे इसका महत्व रक्षा एवं रोग-निवारण से जुड़ा हुआ स्पष्ट होता है।

आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः ।
स वै स्वजस्य जम्भन उभयोर्वृश्चिकस्य च ॥[6]

इसका वानस्पतिक नाम- (**Clitoria ternatea linn.**) है । कुल नाम- Fam. Fabaceae है। गुणकषाय,तिक्त -स्निग्ध। रस,लघु- । विपाकशीत।-मधुर ।वीर्य-[7]

औषधि प्रयोगः

1.अपराजिता अन्य द्रव्य के साथ काढ़ा सेवन करने से पूतनाग्रह जुष्ट होता है।

कपोतवङ्का श्योनाको वरुणः पारिभद्रकः ।
आस्फोता चैव योज्याः स्युर्बालानां परिषेचने ।।[8]

2. क्वाथ अन्य द्रव्य के साथ स्नान कराने से पूतनाग्रह शान्त होता हैं ।

कपोतवङ्का श्योनाको वरुणः पारिभद्रकः ।
आस्फोता चैवयोज्याः स्युर्बालानां परिषेचने ।।[9]

➢ **पलाश (पर्ण) (Butea monosperma lim.)**

अथर्ववेद में बाल स्वास्थ्य, रोग और ग्रहदोष निवारण में प्रभावशाली; अन्य औषधियों (वट, पीपल, खैर, पिलखन) के साथ प्रयोग।

भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्वत्थात् खदिराद्ध्वात् ।
भुद्रान्न्यग्रोधात् पर्णात् सा न एह्यरुन्धति ॥[10]

इसका वानस्पतिक नाम- **Butea monosperma lim.** है । कुल नाम-Leguminosae है। गुण -लघुकषाय,तिक्त,कटु -रूक्ष। रस,। विपाक -उष्ण। संस्कृत नाम-कटु।वीर्य -पलाशरक्तपुष्प-,किंशुक, ,समिद्वर,ब्रह्मवृक्ष,क्षारश्रेष्ठ,पक।हिन्दी -ढाकटेसू,।[11]

औषधि प्रयोगः

1. खदिर, कट्फल का सार, पलाश ढ)़ाकतथा अर्जुन की छाल (इनका क्वाथ बनाकर तीन भाग में एक भाग दूध डालकर घृतपाक करेंं। इस से सिद्ध हुए घृत में शर्करा तथा मधु मिलाकर उचित काल में सेवन करने से तथा पथ्य का सेवन करने से बालक शीतपूतना ग्रह से मुक्त हो जाता है ।

खदिरं रोहिणीसारं पलाशं ककुभत्वचम् ।
एतं संभृत्य संभारं क्षीरे सर्पिर्विपाचयेत् ॥
तत् सिद्धं लेहयेत् काले शर्कराक्षौद्रमात्रया ।
शीतपूतनया ग्रस्तो मुच्यते पथ्यभोजनः ।।[12]

2. बढ़, गूलर, पीपल, पिलखन, त्रिवृत्, ढ़ाक तथा कमल के पत्तों से घी और अनार के साथ सिद्ध करके पल्लवयूष बनाया जाता है। यह सम्पूर्ण पित्त रोगों में, गर्भपात, दाह तथा कटुकिनी मे (ग्रह रोग)ंं हितकर होता है ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्तकालापलाशजैः ।।
पल्लवैः कमलानां च घृतदाडिमसंस्कृतः ।
पित्तरोगेषु सर्वेषु गर्भच्यवनदाहयोः ।।
मुख्यः पल्लवयूषोऽयं हितः कटुकिनीषु च ।[13]

3. सप्तपर्ण, खदिर, नागरमोथा, अमलतास की छाल, कुरण्टक तथा देवदारु का लेप उत्तम होता है । (पीतझिण्टी)अथवा पलाश तथा चन्दन को गोमू (राख) की भस्म (ठाक)त्र में मिलाकर लेप करना चाहिये ।

सप्तपर्ण सखदिरं मुस्तमारग्वधत्वचम् ।।
कुरण्टकं देवदारु प्रलेपनमनुत्तमम् ।
पलाशभस्म चैकाङ्गं लेपो गोमुत्रसंयुतः ।।[14]

4.कुटकी, नीम, खैर, पलाश और अर्जुन की छाल इन सबका काढ़ा - बनाकर उसी काढ़े में दूधडालकर उसी से घी सिद्ध करके बच्चे को पिलाये।

रोहिणीनिम्बखदिर पलाशककुभत्वचः ।
निक्वाथ्य तस्मिन्निक्वाथे सक्षीरे विपचेद् घृतम् ॥[15]

निष्कर्षः

अथर्ववेद में अनेकानेक वनस्पतियां प्राप्त है परन्तु यहां पर तीन वनस्पतियां 1.अपामार्ग,2.अपराजिता,3.पलाश प्रस्तुत की गयी है।अथर्ववेद में वर्णित औषधीय वनस्पतियों का उद्देश्य केवल रोगों का उपचार करना ही नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य की समग्र सुरक्षा एवं संरक्षण करना भी है। अपामार्ग, अपराजिता तथा पलाश जैसी औषधियों को उनके विशिष्ट गुणों के आधार पर अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकारों के निवारण हेतु उपयोगी माना गया है। **अपामार्ग** को शोधनकारी, दोषनाशक तथा कफ-पित्त संबंधी विकारों के उपचार में प्रभावी औषधि माना गया है। **अपराजिता** को विशेष रूप से विषहर एवं रोगनाशक औषधि के रूप में स्वीकार

किया गया है, जिसका प्रयोग सर्प एवं बिच्छू के विष तथा अन्य रोगों के निवारण में किया जाता था। **पलाश** का उपयोग मुख्यतः बालरोगों, पित्त विकारों, त्वचा संबंधी रोगों तथा ग्रहदोष से संबंधित चिकित्सा में अन्य औषधियों के साथ किया गया है।

इन औषधियों के गुण, प्रयोग-विधि तथा उनके चिकित्सीय उपयोग से यह सिद्ध होता है कि वैदिक चिकित्सा पद्धति प्रकृति-आधारित, अनुभवसिद्ध एवं सुव्यवस्थित ज्ञान पर आधारित है। औषधियों का चयन रोग के स्वरूप तथा रोगी की आवश्यकता के अनुसार किया जाता है जिससे उपचार अधिक प्रभावी होता है।

अतः कहा जा सकता है कि **अथर्ववेद में वर्णित औषधीय ज्ञान भारतीय आयुर्वेद की प्राचीन एवं सुदृढ़ आधारशिला है**, जो आज भी औषधीय वनस्पतियों के महत्व, प्राकृतिक चिकित्सा तथा स्वास्थ्य संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है।

सन्दर्भ

1.अथर्ववेद भाष्य 4.17.6

2.द्रव्यगुण- विज्ञान,द्वितीय भाग,6/अपामार्ग 224

3.काश्यप संहिता,सूत्रस्थान,चूडाकर्णीयाध्याय 21

4.काश्यप संहिता,सिद्धिस्थान,नस्तकर्मीयासिद्धिर्नाम 14

5.योगरत्नाकर,उत्तरार्धभाग,बालरोगचिकित्सा,उत्सादिनादिविधि, श्लोक 1-2

6.अथर्ववेद भाष्य 10.4.15

7.भावप्रकाशनिघण्टु,गुडूच्यादिवर्गः,अपराजिता,पृ.328

8.भावप्रकाश,मध्यखण्ड,बालरोगोधिकार 71/83

9.योगरत्नाकर,उत्तरार्धभाग,बालरोगचिकित्सा,पूतनाग्रहजुष्ट चिकित्सा,श्लोक 1

10. अथर्ववेद भाष्य 5.5.5

11. द्रव्यगुण- विज्ञान,द्वितीय भाग,5/पर्ण 208

12. काश्यप संहिता,चिकित्सास्थान,बालग्रहचिकित्सिताध्याय

13. काश्यप संहिता,खिलस्थान,यूषनिर्देसीयाध्याय4/51-52

14. काश्यप संहिता,खिलस्थान,विसर्पचिकित्सिताध्याय 14

15.भावप्रकाश,मध्यखण्ड,बालरोगाधिकार 71/99

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1 अथर्ववेद संहिता- भाष्य,श्री पं.जयदेव शर्मा,आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड,अजमेर

2. द्रव्यगुण- विज्ञान (भाग 2),आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी 2019

3. काश्यपसंहिता,(वृध्द जीनकीयं तन्त्र वा) विद्योतिनी हिन्दी व्याख्या,श्रीसत्यपाल भिषगाचार्य,चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी ,वि.सं.2065

4. योगरत्नाकर, विद्योतिनी हिन्दी टीका वैद्यश्रीलक्ष्मीपतिशास्त्री,चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी,वि.सं.2077

5. भावप्रकाशनिघण्टु (सविमर्श-हिन्दीव्याख्योपेतः),डॉ.गगासहाय पाण्डेय,चौखम्भा भारती अकादमी,वाराणसी,संस्करण 2018

6. भाव प्रकाश "विद्योतिनी" (उत्तरार्द्ध) भाग -2 ,श्रीब्रह्मशंकर मिश्र शास्त्रिणा ,चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी